3

पृथ्वी तथा प्राकृतिक संसाधन

प्रिय शिक्षार्थी, पृथ्वी पञ्चमहाभूतों में से एक है। इस पाठ में हम पृथ्वी के विषय में जानेंगे। आप अपने चारों ओर तरह-तरह की वस्तुएं देखते हैं, जैसे कि मकान, जीव-जंतु, पेड़-पौधो, पशु-पक्षी, मिट्टी, चट्टाने, पर्वत, नदी-नाले, तालाब, झीलें, सूर्च, चन्द्रमा, तारे और न जाने कितनी ही अन्य चीजें। बहुत सी घटनाएं भी आप देखते हैं, जैसे-पानी का बहना, सूर्य का निकलना और छिपना, पक्षी के अण्डे में से चूज़ा निकलना, मकड़ी का जाल बुनना, पक्षी द्वारा घोंसला बनाना, सूर्योदय होने पर तारों का ना दीखना, तितली का फूल से पराग चूसना आदि। जो कुछ भी हमारे चारों तरफ है और स्वयं घटित हो रहा है, ये सभी प्राकृतिक घटनाएं हैं। बहुत-सी घटनाएं तथा वस्तुएं ऐसी होती हैं, जिनको हम देख नहीं पाते, केवल अनुभव कर सकते हैं, जैसे गर्मी, सर्दी, हवा, उमस, प्रकाश आदि। आप भी ऐसी प्राकृतिक घटनाओं की काफी लम्बी सूची बना सकते हैं। ऊपर बताई गई सभी वस्तुओं तथा घटनाओं, जिन्हें देखा जा सकता है अथवा अनुभव किया जा सकता है, को सम्मिलित रूप से प्रकृति कहते हैं। इस प्रकृति की उद्भावना पृथ्वी पर ही संभव है। जिस प्रकार पेड़-पौधों, सूर्य, चन्द्रमा, तारे आदि प्रकृति का हिस्सा हैं, ठीक उसी प्रकार हम मनुष्य भी प्रकृति का एक अंग हैं। प्रकृति में सजीव तथा निर्जीव दोनों प्रकार की वस्तुएं आती हैं। जीव-जन्तु, पेड़-पौधो आदि प्रकृति का हिस्सा है। ठीक उसी प्रकार हम मनुष्य भी प्रकृति का एक अंग हैं। प्रकृति में सजीव तथा निर्जीव दोनों

प्रकार की वस्तुएं आती हैं। जीव-जन्तु, पेड़-पौधो आदि प्रकृति के सजीव भाग (घटक) हैं, क्योंकि इनमें जीवन होता है। जबकि हवा, जल, मिट्टी, धूप, पत्थर आदि प्रकृति का निर्जीव भाग (घटक) हैं जिनमें जीवन नहीं होता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि सजीव तथा निर्जीव घटक दोनों एक दूसरे पर आश्रित होते हैं।

आइए, इस पाठ में हम पृथ्वी महाभूत के बारे में जानें तथा देखें कि किस प्रकार पृथ्वी और उसके संसाधन हमारे लिए उपयोगी हैं।

उद्देश्य

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होगें:

- हमारे प्राकृतिक संसाधनों को जान पाने में;
- प्रकृति में हमारे, (मनुष्यों के) लिए उपयोगी संसाधनों को जान पाने में;
- पौधों और जन्तुओं की एक-दूसरे पर निर्भरता समझ पाने में; और
- मनुष्य द्वारा प्राकृतिक संतुलन को प्रभावित किये जाने को समझ पाने में।

3.1 पृथ्वी पर संसाधन

हम अपने आस-पास अनेक प्रकार की वस्तुएं देखते हैं। प्रकृति में जो कुछ भी है वह किसी न किसी रूप में मनुष्य के लिए उपयोगी है। इन्हें प्राकृतिक संसाधन कहते हैं। इनमें से कुछ वस्तुएं अथवा जीव-जन्तु ऐसे हैं जो मानव के लिए वर्तमान में उपयोगी हैं, जैसे कि मिट्टी, गोबर, लकड़ी, जल, पेड़ आदि। परन्तु कुछ वस्तुएं ऐसी हैं जो वर्तमान में मनुष्य के लिए उपयोगी नहीं हैं, जैसे कि मक्खी, मच्छर आदि। प्रकृति में जो संसाधन वर्तमान में मनुष्य के लिए उपयोगी नहीं हैं उसे असंसाधन कहते हैं। यहाँ यह बात विशेष रूप से ध्यान रखने योग्य है कि प्रकृति में आज जो असंसाधन है वह भविष्य में संसाध

न में परिवर्तित हो सकता है। उदाहरण के लिए आदि-मानव के लिए धातुएं असंसाधन थीं, जबकि वे प्रकृति में तब भी उपलब्ध थीं। आदि-मानव उन्हें प्राप्त करना तथा उपयोग में लाना नहीं जानता था, परन्तु आज के मानव के लिए धातुएं बहुत महत्त्वपूर्ण संसाधन हैं। इसलिए हमें सारे प्राकृतिक संसाधनों को बचाकर रखना चाहिए।

हमारी प्राचीन ज्ञान परम्परा में पृथ्वी के संरक्षण के लिए बहुत जोर दिया गया है। वेदों में कहा गया है कि-**"माता भूमिः पुत्रोऽहँपृचिव्याः"** अर्थात् यह ध रती हमारी माता है, माता के समान पोषक है और मैं पुत्र के समान इसका रक्षक हूँ।

ऋग्वेद के अरण्यानी सूक्त में ऋषि का कहना है कि-**"न वा अख्यानिहंन्तसन्श्रृचत्रभिगच्छति"** अर्थात् वनों के महत्व को जानने और उनसे प्रेम करने वाले कभी वनों को नष्ट नहीं करते हैं और न ही कोई अन्य ऐसे वन प्रेमियों के प्रति हिंसा करते हैं। यहां पर ऋग्वेद का ऋषि कह रहा है कि हमारे प्राकृतिक संसाधनों का हमें संरक्षण करना चाहिए।

अथर्ववेद में अथर्वा ऋषि ने पृथ्वी के लिए अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया है-

"यत्रे भूमि विखनामि क्षिप्रं तदपु रोहतु।

मा ते मर्म विमृग्वरि मा ते हृदयमर्पिपम्

(12.1.35)

अर्थात् हे भूमि! मैं तेरा जो भी भाग खोदूँ वह जल्दी ही पुनः सही हो जाए। हे खोजने योग्य धरती! मैं कभी भी आपके मर्मस्थल को हानि नहीं पहुँचाऊं और न ही आपके हृदय को दुखी करुँ।

नवीकरणीय तथा अनवीकरणीय प्राकृतिक संसाधन

ऐसे संसाधन, जो प्रकृति में बार-बार और कम समय में ही उत्पन्न हो सकते

हैं, नवीकरणीय प्राकृतिक संसाधन कहलाते हैं, जैसे कि पौधे, लकड़ी, हवा, पानी आदि।

चित्र 3.1 नवीकरणीय प्राकृतिक संसाधन

हमारी पृथ्वी पर जो संसाधन एक बार समाप्त होने के बाद प्रकृति में पुनः उत्पन्न होने के लिए बहुत लम्बा समय यानी लाखों से करोड़ों वर्षों तक का समय ले लेते हैं वह अनीवकरणीय प्राकृतिक संसाधन कहलाते हैं, जैसे कि पेट्रोल, कोयला, मिट्टी का तेल, केरोसिन आदि।

चित्र 3.1 अनवीकरणीय प्राकृतिक संसाधन

कुछ नवीकरणीय संसाधन इतनी बड़ी मात्रा में उपलब्ध हैं कि शायद हमें उनकी कभी कमी न हो। ऑक्सीजन एक नवीकरणीय संसाधन है, क्योंकि

पेड़-पौधे प्रकाश-संश्लेषण के द्वारा रोज ताजा ऑक्सीजन वातावरण में जोड़ते हैं। ठीक इसी प्रकार लकड़ी हमें पेड़ों से प्राप्त होती रहती है। नया पेड़ कुछ ही वर्षों में पूर्णरूप से विकसित हो सकता है। अतः लकड़ी एक नवीकरणीय संसाधन है। लेकिन बहुत से संसाधन यदि बहुत अधिक मात्रा में उपयोग किये जाएं तो समाप्त हो सकते हैं। उदाहरण के लिए-कोयला। कोयले के बनने की प्रक्रिया में लकड़ी धरती की गहराइयों में लाखों वर्षों तक दबी रहती है। इसलिए एक बार इसके समाप्त होने पर मानव को यह निकट भविष्य में पुनः उपलब्ध नहीं हो सकता। अतः लकड़ी एक नवीकरणीय प्राकृतिक संसाधन हैं जबकि कोयला एक अनवीकरणीय संसाधन है।

जैव तथा अजैव प्राकृतिक संसाधन

पृथ्वी के वे प्राकृतिक संसाधन, जिनमें जीवन होता है, जैव संसाधन कहलाते हैं, जैसे कि पेड़-पौधे, मानव, जानवर आदि। तथा वे प्राकृतिक संसाधन जिनमें जीवन नहीं होता है, अजैव प्राकृतिक संसाधन कहलाते हैं, जैसे कि लकड़ी, मिट्टी, हवा आदि।

चित्र 3.3 जैव तथा अजैव प्राकृति संसाधन

क्रियाकलाप 3.1

आप अपने घर में या घर के आस-पास मिलने वाले कुछ संसाधनों यानी वस्तुओं की सूची निम्न वर्गों के अनुसार बनाइए :

1. दो ऐसी वस्तुएं जो स्वयं गति करने में सक्षम हों।
2. दो ऐसी वस्तुएं जो किसी बाह्य कारक (जैसे, साइकिल) से गति करते हो।
3. दो ऐसी वस्तुएं जिन्हें आप खाते हों।
4. दो ऐसी वस्तुएं जो भोजन करती हों।

अब इन सभी संसाधनों में से दो वर्ग इस प्रकार बनाइए कि कए वर्ग में केवल वे ही संसाधन आएं, जिनमें जीवन है अर्थात जिनका जन्म और मृत्यु होती है तथा दूसरे वर्ग में शेष सभी निर्जीव संसाधन हों।

पाठगत प्रश्न 3.1

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

   क) जो संसाधन प्रकृति में निरन्तर और कम समय में ही उत्पन्न होते हैं उन्हें ..... कहते हैं।

   ख) हवा में ऑक्सीजन एक ..... संसाधन है।

2. किन्हीं दो ऐसे प्राकृतिक संसाधनों के नाम लिखिए जो बहुत पहले असंसाधन थे।

3. निम्नलिखित में से प्राकृतिक नवीकरणीय संसाधन छाँटिए :

   पौधे, लकडी, हवा, कोयला, पानी, पेट्रोल

4. निम्न में से जैव संसाधन छाँटिए :

   मानव, पशु, जल, वन, लोहा, हाथी, साइकिल तथा मिट्टी

3.2 मृदा–एक प्राकृतिक संसाधन

प्राकृतिक संसाधनों में मृदा यानी मिट्टी और वन हमारे लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी संसाधन हैं। किसी भी खाद्य उत्पादन के लिए मृदा आवश्यक होती है तो उस पर पैदा होने वाले वन यानी पेड़-पौधे भी हमारे लिए अति आवश्यक होते हैं। आइए इनके बारे में थोड़ा विस्तार से पढ़ते हैं।

मृदा एक प्राकृतिक रूप से फैला हुआ असंगठित पदार्थ है, जिससे पृथ्वी की बाहरी पतली परत बनती है। यह एक प्राकृतिक संसाधन है, जिससे खेती के लिए आधार (माध्यम) बनता है और यह पृथ्वी की सतह पर पौधों की वृद्धि में मदद करता है। मृदा की प्रकृति उसके मूल पदार्थों पर निर्भर करती है, जिनसे उसका निर्माण होता है। कभी-कभी मृदा की परतें हवा, पानी या अन्य कारणों से हट जाती है या बह जाती है। इसे मृदा अपरदन कहते हैं। इससे बचने के लिए काफी संख्या में पेड़ लगाए जाते हैं, ताकि मृदा अपरदन रोका जा सके।

पृथ्वी की ऊपरी सतह (परत) मृदा से बनती है, जो पौधों को उगाने के लिए एक आधार बनती है। क्या आपने कभी यह सोचा है कि यह मृदा बनती कैसे है? मृदा का निर्माण चट्टानों की भौतिक प्रक्रिया के फलस्वरूप होता है। तापमान के घटने-बढ़ने से चट्टानों में दरारें पड़ जाती हैं और टूटने लगती हैं तथा तेज हवा में इनके टुकड़े नीचे गिरकर छोटे-छोटे भागों में बंट जाते हैं। ऐसा रासायनिक प्रक्रिया यानि कि चट्टानों में पाए जाने वाले खनिजों के अपने दूसरे पदार्थों में बदल जाने के कारण होता है। चट्टानें मौसम, नमी, पौधे, जीव, जंतुओं और अन्य साधनों के कारण भी छोटे-छोटे कणों मे बदल जाती है, इसे मिट्टी की अपक्ष्यता कहते हैं। मिट्टी का एक प्रमुख घटक ह्यूमस है, जो पौधे तथा जंतुओं के सड़े-गले अंशों से बनता है। ह्यूमस मिट्टी को उपजाऊ और अच्छी दशा में रखने में मदद करती है। इसके कारण मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ जाती है और पौधों की वृद्धि में सहायक होती है।

मृदा में अनेक पदार्थ पाये जाते हैं, जिनके उचित मात्रा में होने के कारण ही मृदा उपजाऊ बनती है। यदि मृदा में रेत की मात्रा अधिक होगी, तो मृदा सूखी (शुष्क) होगी और यदि चिकनी मिट्टी ज्यादा होगी, तो मृदा अत्यधिक गीली होगी और इस मृदा में कुछ भी उगा पाना मुश्किल होगा।

मृदा (मिट्टी) के प्रकार

भौगोलिक क्षेत्र के अनुसार, मिट्टी के प्रकार-उसके रंग, उसकी बनावट और उसमें पाये जाने वाले तत्वों पर निर्भर करते हैं। भारत में मुख्यत छः प्रकार की मिट्टी पायी जाती है-

1. लाल मिट्टी - जैसा कि नाम से प्रतीत होता है इस मिट्टी का रंग लाल होता है। यह लाल रंग मिट्टी में आयरन आक्साइड की उपस्थिति के कारण होता है। इस मिट्टी में ह्यूमय बिल्कुल कम मात्रा या नाम मात्र को ही पायी जाती है। इस मिट्टी में उर्वकर मिलाये जाते हैं तब यह खेती योग्य बन जाती है।

2. काली मिट्टी - इस मिट्टी की प्रकृति संरक्षित (छिद्रित) होती है और इसमें लोहा और मैग्नीशियम भरपूर मात्रा में पाया जाता है। यह मिट्टी खासतौर से गन्ना और कपास की खेती के लिए अत्यंत उपयोगी होती है।

3. जलोढ़ मिट्टी - यह मिट्टी अत्यंत उपजाऊ, कृषि-योग्य और ह्यूमस युक्त होती है। यह मिट्टी नदियों द्वारा लाकर मैदानों में छोड़ी जाती है। यह दोमट प्रकृति की मिट्टी होती है और इसमें सभी आकार के कण पाये जाते हैं। इस मिट्टी में गेहूँ, सरसों आदि की अच्छी पैदावार होती है।

4. रेतीली मिट्टी - इस मिट्टी मे कण मोटे होते हैं। यह मिट्टी सूखी, रेतीली और संरंध होती है और इसमें खनिजों की पर्याप्त मात्रा पायी जाती है। इस मिट्टी में ह्यूमस की मात्रा कम होती है क्योंकि, इसमें पेड़-पौधों के सड़े-गले अंश कम मात्रा में होते हैं।

5. पर्वतीय मिट्टी – यह मिट्टी अत्यन्त उपजाऊ होती है और इसमें ह्यूमस भी अधिक मात्रा में पाया जाता है।

6. लेटेराइट मिट्टी – यह चिकनी मिट्टी होती है और इसका रंग भी लाल होता है। यह मिट्टी चाय, कॉफी और नारियल उगाने के लिए अच्छी होती है।

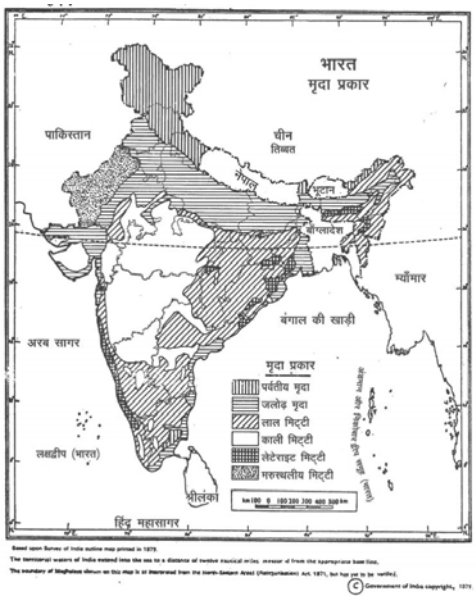

चित्र 3.4 मृदा के प्रकार

क्रियाकलाप 3.2

मिट्टी की विभिन्न किस्मों के बारे में ठीक से समझने के लिए आप अपने आस-पास के क्षेत्रों में जाइये। यहाँ की तरह-तरह की मिट्टियों मे नमूने इक्ट्ठे कीजिए। इसके बाद ऊप बताये गये गुणों के आधार पर यह बताइए कि वहाँ पर किस प्रकार की मिट्टी पायी जाती है।

मृदा-अपरदन

जब काफी तेज हवा चल रही हो, तब आपने देखा होगा कि मिट्टी (धूल) के कण हवा में उड़ते रहते हैं। यही कण आपकी आंखों में भी चले जाते हैं।

आपको गर्मी की ऋतु में चलने वाली धूल भरी आंधियों का भी अनुभव होगा ही। क्या आप जानते हैं कि यह धूल क्या होती है? दरअसल धूल, हवा में पाये जाने वाले मिट्टी के कण ही हैं। वर्षा ऋतु में पहली बारिश के समय भी आप देखते हैं कि पानी के साथ काफी सारी धूल भी बह जाती है। आसमान और जमीन साफ हो जाती है। तेज हवा चलने या पानी बहने के कारण मिट्टी का एक स्थान से दूसरे स्थान पर चला जाना ही मृदा अपरदन कहलाता है।

मृदा अपरदन के कारण भूमि का उपजाऊपन कम हो जाता है और इसके फलस्वरूप उत्पादन भी कम हो जाता है। मृदा अपरदन वर्षा, वायु, वनों की कटाई, पशुओं के अति-चारण और खेती के गलत तरीकों के प्रयोग करने के कारण होता है।

मृदा प्रदूषण

हमारे लिए भूमि और मिट्टी दोनों बहुत ही महत्त्वपूर्ण और उपयोगी हैं। मिट्टी जीवन का आधार बनाती है। लेकिन हमारी बहुत सी ऐसी गतिविधियां हैं, जिनके कारण मृदा जहरीली होती जा रही है तथा इसकी उत्पादन क्षमता भी कम हो रही है। इसे मृदा प्रदूषण कहते हैं। कोई भी ऐसा पदार्थ, जिसके मिट्टी में मिलने से उसकी उत्पादन-क्षमता कम हो जाए या किसी प्रकार से वह जहरीली हो जाए, वह मृदा प्रदूषक कहलाता है। मृदा प्रदूषण के प्रमुख कारक निम्नलिखित हैं :

- कीटनाशकों का उपयोग।
- उद्योगों से निकले बेकार पदार्थों को मिट्टी में डालना।
- घरों से निकली गंदगी और पानी का मिट्टी में मिलना।
- खुले में शौच करना।

पाठगत प्रश्न 3.2

1. मिट्टी कैसे बनती है?
2. भारत में कितने प्रकार की मिट्टी पाई जाती हैं?
3. मृदा अपरदन को कैसे रोका जा सकता है?
4. मृदा अपरदन के क्या-क्या परिणाम होते हैं?
5. उन दो तरीकों को बताइये जिनसे मृदा प्रदूषक होता है?

3.3 वन और उनका महत्त्व

हमारा दूसरा महत्त्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन वन हैं। हमारे जीवन में वनों का बड़ा महत्त्व है। वनों से हमें विभिन्न प्रकार की वस्तुएं प्राप्त होती हैं और वन्य प्राणी भी इनमें रहते हैं। परन्तु मानव जनसंख्या के बढ़ने, उद्योग लगाने, घर बनाने, यातायात के लिए जैसे अन्य कई कारणों से वनों को काटा जा रहा है। इसके परिणामस्वरूप वनों के साथ-साथ वन्य प्राणियों की संख्या में भी कभी हो रही है।

चित्र 3.5 अरण्य (वन)

वन वह प्राकृतिक क्षेत्र हैं, जिसमें अपने आप उगे हुए पेड़ और स्वतंत्र रूप से रहने वाले वन्य जीवन भी शामिल होते हैं। वनों को दुबारा लगाया जा सकता है।

इसका अर्थ है कि वन नवीकरणीय संसाधन हैं। वन एक उत्पादक के साथ-साथ सुरक्षात्कम रूप में भी काम करते हैं। वन बाढ़ आने को रोकते हैं। क्या आप जानते हैं कि बहुत से उपयोगी पदार्थ हमें वनों से ही प्राप्त होते हैं। हाँ, लकड़ी, पहली ऐसी वस्तु है, जो हमारे दिमाग में सबसे पहले आती है, लेकिन इसके अलावा भी दूसरी कई ऐसी वस्तुएं हैं जो हमें वनों से प्राप्त होती हैं, जैसे कि लाख, तेंदू पत्ता, विभिन्न प्रकार की औषधियां, गोंद, रेज्गिम, इत्र आदि।

वैदिक संस्कृति में पर्यावरण के छोटे-छोटे घटक को विशिष्ट स्थिति में श्रेष्ठ माना गया है। और कहा गया है कि जिस प्रकार माता-पिता संतान का पालन पोषण करते हैं ठीक उसी प्रकार भूमि और सूर्य मण्डल पालन व धारण करते हैं-

-द्योष्पितः पृथिवि मातरघ्रगग्ने-

-भातर्वसवोमूलता नः।

(ऋग्वेद 6.51.5)

वनोन्मूलन (वनों का काटना)

आजकल मानव जनसंख्या में वृद्धि होने के कारण लोगों के रहने के लिए जगह की समस्या हो गयी है, जिसको सुलझाने के लिए वनों को काटना बहुत ही सामान्य सी बात हो गयी है। पेड़ों और वनों को इस प्रकार काटना वनोन्मूलन कहलाता है। वनोन्मूलन के बहुत से कारण हैं, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं -

- सड़क, बाँध और रेल पटरियों के निर्माण के लिए।
- खनन और उत्खनन प्रक्रिया के लिए।
- उद्योगों के लिए कच्चा माल प्राप्त करने के लिए।
- खेती के लिए बढ़ती जमीन की मांग की पूर्ति के लिए।
- ईंधन और इमारती लकड़ी की बढ़ती मांग की पूर्ति के लिए।

वनों का संरक्षण

अब, सवाल यह उठता है कि हमें वनों के संरक्षण की आवश्यकता क्यों होती है? जैसा कि हम जानते हैं, वन हमारे प्राकृतिक संसाधन हैं। ये बहुत से जानवरों और प्राणियों के रहने का स्थान है। वन हमारे पर्यावरण का तो एक

चित्र 3.6 वन संरक्षण

महत्त्वपूर्ण भाग हैं ही, साथ ही हमारी आर्थिक स्थिति में भी इसका महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। वन मृदा अपरदन और वायु प्रदूषण को रोकते हैं और वन्य प्राणियों को रहने के लिए आश्रय देते हैं। यदि आप वन्य जीवों के रहने के स्थान को समाप्त कर देंगे तो वन्य जीवों की संख्या में कमी हो जायेगी,

जिसके कारण प्राकृतिक संतुलन बिगडता है। अतः वनों को बचाने की आवश्यकता है तथा नए वन लगाने की आवश्यकता है।

वन्य जीव संसाधन

वन्य जीव ऐसे जानवर हैं, जिन्हें सामान्य प्रत्यक्ष रूप से मनुष्यों द्वारा उपयोग में नहीं लिया जाता। इनमें स्तनधारी, सरीसृप, पक्षी, मत्सय तथा उभयचर जीवों की हजारों प्रजातियों को शामिल किया जाता है। भारतीय वन्य जीवों में शेर, चीता, हाथी, हिरन, बारहसिंगा, बत्तख, तेंदूआ, गैंडा, सोन चिड़िया, मगरमच्छ, कछुआ आदि को शामिल किया गया है। नेशनल पार्क वे स्थान है, जहाँ सभी प्रकार के वन्य जीवों को संरक्षण प्राप्त होता है। लेकिन वन क्षेत्र के अलावा वह क्षेत्र या स्थान, जहाँ जंगली जानवरों और पक्षियों को उनके प्राकृतिक पर्यावरण (वातावरण) में रखा जाता है वन्य जीवन अभयारण्य कहलाता है।

पाठगत प्रश्न 3.3

1. वनों से प्राप्त होने वाले दो उपयोगी पदार्थों के नाम बताइए?
2. वनोन्मूलन के दो कारण बताइए।
3. वनोन्मूलन के दो हानिकारक प्रभाव बताइए।
4. वन्य जीवों में शामिल चार जानवरों के नाम बताइए।

आपने क्या सीखा

- पृथ्वी पर प्राकृतिक संसाधन
- मृदा – एक प्राकृतिक संसाधन
- वन तथा उनका महत्त्व

पाठांत प्रश्न

1. नवीकरणीय तथा अनीवकणीय संसाधनों को उदाहरण देते हुए उनके बीच के अन्तर को लिखिए।

2. हमें वनों का संरक्षण क्यों करना चाहिए?

उत्तरमाला

3.1

1. क नवीनकरीणय संसाधन

   ख नवीनकरीण संसाधन

2. धातुएं, तेल

3. पौधे, लकडी, हवा, पानी

4. मानव, पशु, हाथी

3.2

1. चट्टानों की भौतिक प्रक्रिया से

2. 6 प्रकार की

3. वर्षा जल को रोक कर, पेड़ लगाकर, खेते के उत्तम तरीकों से।

4. भूमि का उपजाऊपन कम जो जाता है।

5. कीटनाशकों का उचित प्रयोग, उद्योगों के जल को छोड़ना

टिप्पणी

3.3

1. गोंद औषधियां।
2. खेते के लिए बढती जीमन की मांग, इमारती लकड़ी
3. वायु प्रदुषण, वर्षा का कम होना, पृथ्वी का गर्म होना
4. शेर, चीता, हाथी, गैंडा